International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

डॉ. भीमराव अम्बेडकर: बौद्ध धर्म का चन्तन

डॉ. गोपाल संह
सह-आचार्य (राजनीति वज्ञान)
राजकीय महा वद्यालय, शवगंज सरोही

बौद्व धर्म ग्रहण करने से पूर्व डॉ.भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म का गहन अध्ययन किया। वास्तव में वे अपने धर्म परिवर्तन के निर्णय में किसी प्रकार की जल्द बाजी करना चाहते थे नहीं किसी प्रकार का संशय रखना चाहते थे। जिस समय उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार किया उस समय इस धर्म का कोई भी मौलिक साहित्य प्रचूर मात्रा में भारत में उपलब्ध नहीं था, इसलिए उन्होंने विदेशों से सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य मंगाकर उसका अध्ययन किया।

बुद्ध वचनों का संग्रह बुद्ध के महापरिनिर्वाण के चार सौ वर्ष बाद हुआ। उसमें भी कालान्तर मं परिवर्तत होता रहा। इसलिये बुद्ध वचनों का संग्रह–त्रिपिटक–भी सम्भ्रवतः उनका मूल चिन्तन नहीं है। ऐसी स्थिति में यह निश्चय करना कठिन है कि कौनसा बुद्ध का असली वचन है? अम्बेडकर ने त्रिपिटक में ही बुद्ध का यह वचन पढ़ा – ''भिक्षुओं, जो मानव– कल्याणकारी है, वह मेरा वचन है। ऐसा मानना।'' इसका अर्थ हुआ कि जो मानव–कल्याण में बाधक है, वह बुद्ध–वचन नही हो सकता। बस, इसी वचन को कसौटी मानकर अम्बेडकर ने सम्पूर्ण त्रिपिटक का अध्ययन किया ओर वास्तविक बौद्ध धर्म को खोज निकाला।[1]

अम्बेडकर से पूर्व बौद्ध धर्म का इतना बड़ा अन्वेषक भारत में कोई नहीं हुआ। धर्मानन्द कौशाम्बी और राहुल सांकृत्यायन सरीखे विद्वान भी बौद्ध दर्शन के अध्ययन में अनेक जगह भटके है, और जटिलताओं में ऐसे उलझे है कि कोई समाधान नहीं खोज

सकें। धर्म और दर्शन एक गम्भीर विषय है। उसमें इतनी जटिलताएं है कि औसत बुद्धि का व्यक्ति उसमें प्रवेश करने के बाद बुरी तरह फंस जाता है। ऐसा सदैव भक्ति या आस्था के कारण होता है। इसलिये जिज्ञासु व्यक्ति को इस व्यूह में विवेक और तर्क के सहारे प्रवेश करना चाहिए, तभी वह जटिलताओं को पार करता हुआ धर्म और दर्शन के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वास्तविक तत्व तक पहुंच सकता है। अम्बेडकर ने ऐसा ही किया था, इसलिये उनके विचार तार्किक और विवेकपूर्ण है।

बौद्ध धर्म के रूप में अम्बेडकर को ऐसा पवित्र धर्म मिला जो पूर्णतया उनके विचारों का ही प्रतिनिधित्व करता है। अम्बेडकर के अनुसार– बुद्ध धर्म ही ऐसा धर्म है जिसे संसार अपना करता है। बौद्ध धर्म सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ क्यों है? इसका उत्तर देते हुए अम्बेडकर का कहना था– ''बुद्ध ने अहिंसा के अलावा और भी बहुत–सी बातों की शिक्षा दी। उन्होंने अपने धर्म के अंग के तौर पर सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और राजनैतिक स्वतन्त्रता की शिक्षा दी। उन्होंने समानता की शिक्षा दी, न केवल मनुष्य–मनुष्य के बीच समानता वरन् पुरूष और स्त्री के बीच भी समानता की भी शिक्षा दी। बुद्ध की तुलना में कोई ऐसा धार्मिक उपदेशक मिलना कठिन होगा। जिनके उपदेश सर्वसाधारण के सामाजिक जीवन के इतने पहलुओं को स्पर्श करते है और जिनके सिद्धान्त इतने आधुनिक है और जिनका सबसे महत्वपूर्ण उददेश्य यह है कि व्यक्ति को इस धरती पर अपने जीवन में निर्वाण प्रदान करना, न कि मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में यह निर्वाण उसे प्रदान करने का वादा करना।[2]

बौद्ध धर्म का गहन अध्ययन कर अम्बेडकर ने अनुभव किया कि वास्तव में बौद्ध अम्बेडकर बौद्ध धर्म को धर्म नही है वरन धम्म मानते है। धम्म का अर्थ मार्ग, रास्ता अथवा पद्धति है। मानव को किस मार्ग से जीवन जीना चाहिए यह मार्ग बताने वाला बौद्ध धम्म

है। यह आस्था, विश्वास और कर्मकाण्डों का धर्म नही है। जैसा हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म और ईसाई धर्म है। हिन्दू, इस्लाम और ईसाई तीन धर्म ईशवरवादी है पर बौद्ध धम्म अनीश्वरवादी है। तीनों धर्मो मं आत्मा है, परमात्मा है। हिन्दू धर्म में तो इसके साथ पुर्नजन्म भी है। किन्तु बौद्ध धम्म में ईश्वर, आत्मा, पुर्नजन्म, भाग्यवाद कुछ भी नही है। इस दृष्टि से बौद्ध धर्म प्रचलित सभी धर्मो से निन्तात भिन्न हैं।

अम्बेडकर के अनुसार हर धर्म के दो क्षेत्र होते है दर्शन और कर्मकाण्ड।[3] कर्मकाण्ड में आचार, विचार, संस्कार और त्यौहारों के साथ–साथ सामाजिक जीवन व्यवस्था के नियम और सिद्धान्त भी सम्मिलित है, जैसे– हिन्दू धर्म में वर्ण व्यवस्था। बौद्ध

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धम्म दर्शन का धम्म है कर्मकाण्ड का नही होगा, यह संस्कृति रहित और सामाजिक व्यवस्था के नियमों से रहित धर्म्म है। इसमें आचार–विचार संस्कार और त्यौहारां को स्थान नहीं है और न कोई कर्मकाण्ड होता है। सामाजिक व्यवस्था में वर्ण श्रम– व्यवस्था को कोई स्थान बौद्ध धम्म में नहीं है जिसने ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र चार भागों में समाज को विभक्त कर रखा हो।

अम्बेडकर के विचार में बौद्ध धर्म अन्य धर्मो की तुलना में धार्मिक, सामाजिक और नैतिक तीनों क्षेत्रों में भिनन है।[4] धार्मिक दृष्टिकोण से हिन्दु, इस्लाम, ईसाई, विश्व के तीन प्रमुख धर्म ईश्वर– आत्मा को मानते है। बौद्ध ईश्वर–आत्मा को नहीं मानते है। इस्लाम को छोड अन्य धर्म पुर्नजन्म को मानते है जबकि बौद्ध पुर्नजन्म को भी नहीं मानते है। सामाजिक दृष्टि से भी बौद्ध धर्म अन्य धर्मो से भिन्न है। हिन्दू धर्म सामाजिक व्यवस्था में चार वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, और शूद्र में समाज को विभाजित करता है और छूत–अछूत, ऊंच–नीच का भेद–भाव पैदा करता है। इस्लाम और ईसायत में जाति–पांति नहीं है। पर वे काले–गोरे में अन्तर करते है। इस्लाम वाले इस्लाम और गैर इस्लाम वालों

में भेद और घृणा भाव रखते है। बौद्ध धर्म में ऐसा कुछ भी नहीं है वह सामाजिक समानता मानता है। नैतिक दृष्टि से भी बौद्ध धर्म और अन्य धर्मो में अम्बेडकर ने व्यापक भेद अनुभव किया है। उनके विचार में सभी धर्म हिंसा में विश्वास करते है। हिन्दू धर्म के यज्ञों में बलि विधान को धार्मिक व्यवस्था माना गया है। इस्लाम में कुर्बान धर्म का अंग हैं। ईसायत में मांस के सेवन पर प्रतिबन्ध नहीं है। स्पष्ट है कि ईसायत में भी हिंसा वर्णित नहीं है। किन्तु अम्बेडकर ने अनुभव किया कि बौद्ध धर्म ऐसा नहीं है। वह मानवतावादी तथा अहिंसा पर आधारित है। जहां हिन्दू, इस्लाम और ईसाई तीनों धर्म को ईश्वर का दास या गुलाम बनाते है वहीं बौद्ध धर्म मानव को मानव बनाये रखने की प्रेरणा देता है। इस दृष्टि से बौद्ध धर्म मानव धर्म है और जो ''मानव सेवा'' अर्थात'' नर सेवा ही नारायण सेवा'' जैस आदर्श सिद्धान्तों में विश्वास करता है।[5]

अम्बेडकर बौद्ध धर्म को क्यों पसंद करते थे? इसका स्पष्टीकरण करते हुए अम्बेडकर ने कहा कि– ''बुद्ध धर्म मं एक ही स्थान पर तीन सिद्धान्त मिलते है। अन्य

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किसी धर्म मं ये नही पाये जाते है। ये है प्रज्ञा, करूणा और समता। बुद्ध धर्म मुझे समता का पाठ देता है वह अंधश्रद्धा और अलौकिकता का पाठ नही देता। प्रज्ञा, करूणा और समता की मनुष्य को अच्छे और सुखी जीवन के लिए आवश्यकता है।[6] उनके अनुसार– ईश्वर या आत्मा समाज को उसके अधः पतन से नहीं बचा सकते। बौद्ध धर्म ही व्यक्ति और समाज को क्रान्ति से बचा सकता है बुद्ध की सीख ही रक्तविहीन क्रान्ति द्वारा साम्यवाद ला सकती है।[7] अम्बेडकर के विचार में बुद्ध धम्म यह भी मानता है कि सचेत मन में इतनी शक्ति है कि वह अपने आपको अचेत प्रभाव से मुक्त करा सकता है, यही कारण है कि यह धर्म चैतन्य रहने की शिक्षा देता है, ताकि परम सचेत मन के स्तर तक पहुंचने में हम सक्षम हो सकें।[8] जो कि परमज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक भी है।

अम्बेडकर के अनुसार बौद्ध धर्म समतावादी समाज की स्थापना में विश्वास करता है। स्वयं महात्मा बुद्ध वर्ण व्यवस्था और जातिवाद के कट्टर शत्रु थे। उनका धर्म बहुजन हिताय था वे स्वर्णो के साथ–साथ बहुसंख्यक शूद्र वर्ग को भी अपनाकर चलते थे। बौद्ध धर्म के द्वारा सबके लिए समान रूप से खुले है। किसी के लिए कोई रोक नही है। बौद्ध धर्म का आमन्त्रण ऐसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जो समतावादी समाज–रचना में विश्वास रखता है।[9]

अम्बेडकर को बौद्ध धर्म की जिस बात ने सर्वाधिक प्रभावित किया वह थी समाज में स्त्रियों की सम्मानजक स्थिति और पुरूषों के समकक्ष प्राप्त उनकी स्वतंत्रता। अम्बेडकर ने अपने अध्ययन में पाया कि बौद्ध धर्म में स्त्रियों के लिये किसी पृथक आचार–संहिता की व्यवस्था नहीं है। वस्तुतः बुद्ध की आस्था नियमों में नहीं थी, नैतिक सिद्धान्तों में थी। इसलिये उन्होंने किसी प्रकार के नियमों में मानव को नही जकड़ा। हिन्दू–समाज में नारी का पृथम धर्म है। इस अनुसार, स्त्री जाति के लिये स्वतंत्र न होना ही सब प्रकार से मंगलदायक है। उसमं बहुत से अवगुण होते है। अतएव उनके स्वतंत्र हो जाने से अत्याचार, अनाचार आदि दोषों की वृद्धि होकर देश, जाति, समाज को बहुत हानि पहुंच सकती है।[10] इसलिये स्त्रियों के लिये आदेश है कि स्त्री को कोई भी कार्य स्वतंत्र होकर नहीं करना चाहिए। बाल्यावस्था में स्त्री पिता के,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यौवनावस्था में पति के और पति के मर जाने पर पुत्रों के अधीन होकर रहे, किन्तु स्वतंत्र कभी न रहे।[11] पति की सेवा उसका एकमात्र धर्म है। उसे पति से अलग किसी यज्ञ, व्रत और उपवास का अधिकार नही है।[12] स्पष्ट कि स्त्री का स्वयं का अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं, वह जन्म से मृत्युपर्यन्त पुरूष पर आश्रित है।

अम्बेडकर ने अपने अध्ययन में अनुभव किया कि हिन्दू धर्माचार्यो ने नारी के लिये पृथक और एक पक्षीय विधानों का प्रतिपादन कर, शूद्र की भांति उसे भी मानवता से अलग–अलग कर दिया। इससे हिन्दू नारी पुरूष की अर्धागिंनी मात्र बनकर रह गयी और उसके व्यक्तित्व का स्वाभाविक विकास अवरूद्व हो गया। किन्तु बौद्ध धर्म में नारी के लिये ऐसी कोई सीमा रेखा नही है। वह नारी को तुच्छ नहीं, पवित्रता की प्रतिमूर्ति मानते है। बुद्ध कथन था – ''स्त्री संसार की महानतम् विभूति है, क्योंकि उसकी अपरिहार्य महत्ता है। उसके द्वारा ही बोधिसत्त्व तथा विश्व के अन्य शासक जन्म ग्रहण करते है।[13] बुद्ध ने ही प्रथम बार स्त्रियों को प्रव्रज्या (संन्यास) की अनुमति देकर क्रान्तिकारी कार्य किया। जबकि इसके पूर्व हिन्दू धर्म की व्यवस्था में सन्यास तो दूर, स्त्रियों के लिये ज्ञानार्जन भी वर्जित था।[14] ''भगवान बुद्ध ने स्त्रियों को प्रव्रज्या देकर एक साथ दो त्रुटियों को दूर किया। एक और तो उन्होंने स्त्रियों के ज्ञानार्जन का अधिकार स्वीकार किया, दूसरी ओर उन्हें पुरूषों के समान आत्मज्ञान प्राप्त करने की क्षमता वाला अंगीकार किया। बुद्ध ने इस प्रकार एक क्रान्ति ही नहीं की वरन भारतीय स्त्रियों को मुक्ति भी दिलायी।

अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म ग्रन्थों का गहन अध्ययन करने के पश्चात बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में अपनी निम्न मान्यताओं को स्पष्ट किया।[15]

(1) बुद्ध धम्म एक दर्शन है हिन्दू धर्म की भांति बौद्ध धम्म में मत भिन्नता नहीं है, सीधा–सादा दर्शन है जिसमें न ईश्वर की कल्पना है, न आत्मा का अस्तित्व। संसार स्वतः निर्मित हैख् जो बनता है और बिगडता है, इसका कोई कर्त्ता नहीं है। संसार में दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख निवारण हो सकता है और दुःख निवारण के उपाय हैं प्रज्ञा, शील, करूणा, अहिंसा, बौद्ध धर्म दर्शन के स्थाई सूत्र है। बुद्ध धम्म

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ज्ञान (बुद्धि) का दर्शन है। किसी बात को ज्ञान की कसौटी पर कसे बिना न मानना बौद्ध धम्म का दर्शन है।

(2) बुद्ध धम्म का आधार नैतिकता है, बौद्ध धम्म एक जीवन जीने का मार्ग है। बौद्ध धम्म में नैतिकता ही धर्म है। इसमें प्रार्थनाओं, तीर्थ यात्राओं, रीति–रिवाजों और बलि कर्मो के लिए कोई स्थान नही है। यह धम्म कर्मकाण्डों और दैवीय शक्ति की कल्पना से अलग है। इसका केन्द्र बिन्दु मानव और उसका कल्याण है। इसमें आदमी के कल्याण के लिए नियम है जो नैतिकता पर आधारित है। यह धम्म स्वः अनुशासन का धर्म है जो यह मानकर चलता है कि मनुष्य को अपना कल्याण करना है तो दूसरे का कल्याण करके ही वह अपना कल्याण कर सकते है।

(3) बुद्ध धम्म पुरोहितवाद के विरूद्व है। बुद्ध धम्म में पुरोहितवाद को कोई स्थान नहीं है। बुद्ध धम्म में भिक्षु और भिक्षु संघ है। भिक्षु अनुशासनबद्ध बौद्ध होता है, वह ब्राह्मण पुरोहित की भांति स्वामी या शोषक की भांति आचरण न करते हुए भाई, मित्र मार्ग–दर्शक होता है। हिन्दू धर्म में जैसे जन्म से पुरोहित होता है, बुद्ध धम्म में जन्म से भिक्षु नहीं होता है। पुरोहित मां के पेट से बना बनाया पैदा होता है जबकि भिक्षु बनता हैं। पुरोहित जाति का ब्राह्मण होता है जबकि एक भिक्षु की कोई जाति नही होत है। पुरोहित के लिए शिक्षा प्राप्त किए हुए होना अनिवार्य नहीं है, भिक्षु के लिए आवश्यक है। पुरोहित अपार धन एकत्र रख सकता है जबकि भिक्षु कोई धन एकत्र करके नहीं रख सकता है। भिक्षु अपने स्तर से हटाया भी जा सकता है किन्तु एक ब्राह्मण पुरोहित हटाया नहीं जा सकता है।

(4) बुद्ध धम्म में धर्म ग्रन्थों की कोई मान्यता नहीं है। बुद्ध ने धर्म शास्त्रों की मान्यता को नकार दिया। उनके अनुसार –''किसी बात को इसलिए मत मान लेना कि वह अमुक पुस्तक में लिखी है जिस पर तुम श्रद्धा रखते हो, किसी बात पर विश्वास मत करना कि ऐसे तुम्हारे बाप–दादा करते आए है, किसी को इसलिये भी मत मानना कि यह एक महापुरूष ने कही है। इसके विपरित हर बात को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपने विवेक की कसौटी पर कसना और जब वह सत्य सिद्ध हो जाय तभी मानना।''

(5) बुद्ध धम्म में नारी रक्षणीय और सम्मानीय है। बुद्ध पुरूष का सबसे बडा सखा नारी को मानते थे। नारी के बारे में बुद्ध के विचार यहां तक थे कि जब उनसे यह पूछा गया कि संसार में मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम वस्तु क्या है, उनका उत्तर था–''वह वस्तु स्त्री है।'' बुद्ध ने नारी को रक्षणीय बताया है और पुरूष के बराबर उसको समान अधिकार दिए हैं। उन्होंने नारी को समता और सम्मान का स्थान दिया और उसको व्यावहारिक रूप दिया।

(6) बुद्ध धम्म परिवर्तन को मानता है इसके अनुसार कोई व्यक्ति जन्म से ऊंच–नीच, अच्छा या बुरा नही होता है, उसे पुराने रीति–रिवाज अच्छा या बुरा बनाते है। इसलिए सच्चा सुधार तभी हो सकता है जब हम पुराने रीति–रिवाज त्याग दें बौद्ध धम्म स्पष्ट आदेश देता है कि जो नियम, परम्परा मानव के उत्थान में बाधक हो उसे नष्ट कर विवेकयुक्त रास्ते का निर्माण करना चाहिए।

(7) बौद्ध धम्म अस्तिक न होकर नास्तिक है और स्वर्ग–नर्क की कल्पना रहित है। यह ईश्वर की सत्ता को नकारता है और जब ईश्वर ही नही है, तो स्वर्ग भी नही है, जहां ईश्वर रहता है और न ही नर्क–स्वर्ग में पहुंचने वाला कोई है। इस प्रकार बौद्ध धम्म में जब ईश्वर ही नहीं है तो उसके अवतार का भी प्रश्न नही उठता

(8) बौद्ध धम्म केवल भौतिक और दैहिक उन्नति तक ही सीमित है। अलौकिकता के लिए बौद्ध धर्म में कोई स्थान नहीं हे। आत्मा को बुद्ध ने नकार कर केवल मनुष्य और संसार तक ही जीवन के सीमित अर्थ को सीमित कर दिया है। बुद्ध का दर्शन व्यक्ति के चारों ओर घूमता है उनके सामने अदृश्य और पारलौकिक कोई वस्तु नहीं है।

(9) बौद्ध धम्म समाज में वर्ग–भेद पैदा नहीं करता है। यह समता और स्वतंत्रतावादी धम्म है। बौद्ध धम्म कीट–पतंगों में जात मानता है। व्यक्ति–व्यक्ति में कोई जाति नही मानता। व्यक्ति–व्यक्ति समान है, न कोई ऊंच है न कोई नीच। बौद्ध धम्म

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में जाति–भेद और वर्ण–व्यवस्था नहीं है और न छुआछुत जैसी कोई व्यवस्था है। बौद्ध दर्शन ''भवतु सब्ब मंगलम'' और ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' पर आधारित है।

(10) बौद्ध धम्म हिंसा से विरत धम्म हैं यह करूणा का धम्म है। जीवन हिंसा विरोधी मत है।

(11) बौद्ध धम्म गरीबी को अभिशाप मानता है। यह समाजवादी व्यवस्था में विश्वास करता है जबकि हिन्दू धर्म पूंजीवादी और रूढ़िवादी है।

अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म का गहन अध्ययन कर अन्त में यह निष्कर्ष निकाला है कि–बौद्ध धर्म समतावादी व मानवतावादी होने के साथ–साथ यर्थाथ वाद व ज्ञानवाद की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति है जिसका आधार है तर्क और विवेक। तर्क और विवेक से परे बौद्ध धर्म में कुछ भी विवेक से परे बौद्ध धर्म में कुछ भी नही है। तर्क और विवेक ही व्यक्ति का मार्गदर्शक एवं उसके समस्त शुभ कार्यो की प्रेरणा हैं इसलिए अम्बेडकर का कहना था कि ''भुगतान बुद्ध के बारे मे एक बात बडे ही विश्वास के साथ कही जा सकती है : वे कुछ नही थे, यदि उनका कथन बुद्धिसंगत, तर्क संगत नहीं होता था। जो बात बुद्धि संगत है, जो बात तर्क संगत है, वह ''बुद्ध–वचन'' है।[16]

जिस बात का मानव कल्याण से कोई सम्बन्ध नहीं उसे बुद्ध वचन स्वीकार नहीं किया जा सकता।

बौद्ध धर्म की इसी वैज्ञानिकता के कारण ही न केवल भारत में वरन् विदेशों में भी बौद्ध धर्म का विकास हुआ। विश्व के प्रायः सभी दार्शनिकों ने बौद्ध धर्म और दर्शन को महत्व दिया है। अनेक विदेशी विद्वान बौद्ध धर्म को ''धर्मो और दर्शनों का परिवार'' मानते है।[17] विदेशी विद्वान ई.जी. टेलर का बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में कहना था कि – ''काफी समय से आदमी बाहरी ताकतों के दबाव में रहा है यदि उसे सभ्य शब्द के वास्तविक अर्थ में सभ्य बनना है, तो अपने ही नियमों द्वारा उसे अनुशासित रहना सीखना होगा। बौद्ध धर्म ही वह प्राचीनतम नैतिक विचारधारा है, जिसमें आदमी को स्वयं अपने आप अनुशासक बनने की शिक्षा दी गई है। इसलिए इस प्रगतिशील संसार को बौद्ध धर्म की आवश्यकता है, ताकि वह इससे यह ऊंची शिक्षा प्राप्त कर सकें।[18]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय चिन्तन में भी बौद्ध धर्म को गौरवशाली स्थान प्राप्त हुआ है। प. राहुल सांकृत्यायन का विचार था– ''बुद्ध स्वतन्त्र चिन्तक थे, वे चाहते थे दूसरे कोई भी अन्धानुकरण न करें, अपने रास्ते का स्वयं निश्चय करें। इसी कारण बौद्ध दर्शन ने धर्मग्रन्थों और आप्त वचनों को नही माना। बौद्ध केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानते है। अनुमान को भी उतने ही अंश तक, जितना की वह प्रत्यक्ष पर आधारित हैं।[19]

बौद्ध धर्म की इसी बौद्धिक सहजता ने स्वामी विवेकानन्द को भी प्रभावित किया। उनका कहना था कि '' मैं गौतम बुद्ध के समान चरित्र–बलशाली लोग देखना चाहता हूँ. .....बुद्ध ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जो पूर्णतया तथा यथार्थ में निष्काम कहे जा सकते है।[20]

स्पष्ट है डा. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को बहुत अधिक उदार पाया। उनके अनुसार बौद्ध धर्म में वर्णभेद, जातिभेद और देश भेद नहीं है। यह धर्म सबसे अधिक जनतन्त्रवादी है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह बौद्ध धर्म अम्बेडकर को पूर्ण रूप से अपने आदर्श समाज के अनुकूल अनुभव हुआ। स्वयं अम्बेडकर का कहना था कि''मेरा आदर्श समाज एक ऐसा समाज है, जिसका आधार स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व हो।[21] चूंकि अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म में यह सब कुछ पाया था, इसलिए प्रभावित होकर न केवल स्वंय ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया, वरन अस्पर्शयों को भी बौद्ध धर्म में दिक्षित होने के लिए प्रेरित किया।

संदर्भः–

1. कँवल भारती : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने ? 1983, पृ. 80
2. कँवल भारती : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने ? 1983, पृ. 70–76
3. एस.एल. सागर : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने? 1980 पृ. 77
4. ''वही''
5. चेतना मेहता – युग दृष्टा डा. भीमराव अम्बेडकर 1991, पृ. 52
6. धनंजय कीर – डा. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन, 1991 पृ. 490
7. वसंत मून : डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर 1991, पृ. 183
8. भिक्षु संघ रक्षित (अनु.) के.सी. सुलेख : डा. अम्बेडकर की सच्ची महानता, 1991, पृ. 28
9. विनीति विक्रम बौद्धः सम्पा. धर्म चक्र, 1986, पृ. 84
10. कँवल भारती : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने? 1983, पृ. 100
11. मनु–स्मृति (अनु. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी) अध्याय–5, श्लोक नं. 147–148, 1988, पृ. 174

12. ''वही''– अध्याय–5 श्लोक नं. 155, 1988, पृ. 175
13. कँवल भारती : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बनें? 1983, पृ. 101
14. बी.आर. अम्बेडकर : द् राईज एण्ड फॉल ऑफ हिन्दू वीमैंन, 1988, पृ.28
15. एस.एल. सागर : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने? 1980, पृ. 102–107
16. बी.आर. अम्बेडकर : (अनु.भ.आ. कौसल्यायन) भगवान बुद्ध और उनका धर्म, 1991 पृ. 278–9
17. कँवल भारती : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बनें, 1983, पृ. 97
18 बी.आर. अम्बेडकर : (अनु.भ.आ. कौसल्यायन) भगवान बुद्ध और उनका धर्म, 1991 पृ. 465
19. कँवल भारती : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बनें, 1983, पृ. 98
20 कँवल भारती : डा. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बनें, 1983, पृ. 98–99
21 डा. बी.आर. अम्बेडकर : एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, 1970, पृ. 63